शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ.मोहन गुप्त के रामकथा परक उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

विक्रम पाटीदार (शोधार्थी)
श्री मध्य भारत हिंदी साहित्य समिति इंदौर
डॉ.हरिमोहन बुधौलिया (निर्देशक)
पूर्व संकायाध्यक्ष
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

रामकथा का हमारे समाज व जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। हर व्यक्ति रामकथा से प्रेरित व प्रभावित होकर उसे अपने जीवन में उतारने का कुछ प्रयास तो करता ही है। साहित्यिक भी रामकथा के प्रभाव से अछूता नही रहा। प्रत्येक काल के साहित्यकारों ने रामकथा से प्रेरित रचनाएँ लिखीं। आधुनिककाल के अनेक साहित्यकार भी रामकथा को अपनी रचनाओं का विषय बनाते रहे हैं। डॉ.मोहन गुप्त ने भी रामकथा को आधार बनाकर गद्य विधा को समृद्ध किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ.मोहन गुप्त के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ उनके रामकथा परक उपन्यासों (विराज राज, अराज राज और सुराज राज) का विश्लेषण किया गया है।

डॉ.मोहन गुप्त : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका के मध्य 28 सितम्बर 1940 को महाराष्ट्र के भुसावल शहर में मोहन गुप्त का जन्म हुआ। पिता श्री रामभजन गुप्त भुसावल में प्रतिष्ठित व्यापारी थे। मोहन गुप्त के ताऊ श्री हीरालाल गुप्त निष्ठावान अध्येता थे। ताऊ श्री हीरालाल गुप्त का मोहन गुप्त के बाल मानस पर गहरा प्रभाव रहा। फलस्वरूप वे गीता के प्रति असीम श्रद्धा रखते थे। सन 1948 में प्राथमिक विद्यालय विजयपुर से अपनी शिक्षा यात्रा प्रारम्भ करने वाले मोहन की शिक्षा यात्रा भी कई पडावों पर अपनी यादगार अमिट छाप छोडते हुए आगे बढ़ती रही। 1956 में उन्होंने मिडिल स्कूल की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आज भी उन्हें अपने अध्यापकों के नाम याद हैं। उनमें श्री रामरज क्षेत्रीय, अश्रय सिंह, बारे लाल श्रीवास्तव, अमरसिंह त्यागी और महेशचन्द्र मुख्य हैं। मात्र तेरह वर्ष की आयु में 1953 में गुप्तजी का विवाह वैयजंती जी से हुआ।

शासकीय सेवा में

सन 1964 में एम.ए. अंगरेजी साहित्य में करने के बाद उन्होंने प्रशासनिक सेवा की परीक्षा दी। जिसमें उनका चयन हुआ। सर्वप्रथम उनकी नियुक्ति 1965 में सागर के डिप्टी कलेक्टर के पद पर हुई। सन 1967 में वे बिलासपुर में एस.डी.ओ. के रूप में पदस्थ हुए। 1980-1982 तक उज्जैन में एडिशन कलेक्टर रहे। 1983-1984 में दतिया में कलेक्टर के पद पर रहे। 19841985 में राज्यपाल के उपसचिव रहे। खरगोन में कलेक्टर रहते हुए उन्हें विशेष प्रसिद्धि मिली। वे पंचायत व समाज कल्याण के संचालक

भी रहे। 1988-89 में भोपाल और होशंगाबाद के एडिशनल कमिशनर के पद पर नियुक्ति हुई। 1989-91 तक एड्रिशनल सेक्रेटरी रेवेन्यु एवं गवर्नमेंट प्रेस में कंट्रोलर के रूप में पदस्थ हुए। 1991-94 में मध्यप्रदेश के श्रम आयुक्त रहे।

कृतित्व

डॉ.मोहन गुप्त ने अनेक विषयों में महारथ हासिल करते हुए हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, दर्शनशास्त्र, खगोलशास्त्र, ज्योतिर्विज्ञान, सार्वजनिक प्रशासन तथा प्राचीन भारतीय साहित्य एवं संस्कृति आदि अनेक विषयों पर लेख लिखे। उनकी साहित्य साधना ने उन्हें प्रसिद्धि दी। सन् 1982 में उनकी पुस्तक 'भवभूति के साहित्य में दुःखद भाव' पुस्तक प्रकाशित हुई। शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'मेकबैथ' का संस्कृत में अनुवाद किया जो 'मेद्यवेधम' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। हिन्दी उपन्यास 'अराज राज' (1988), 'विजय राज(1995)' और 'सुराज राज (2009)' में प्रकाशित हुए। ये तीनों उपन्यासरामकथा पर आधारित हैं।

इनके अतिरिक्त उनकी रचनाओं के नाम निम्नलिखित हैं :

1 महाभारत का कालनिर्णय (2003)

2 वेदों की प्राचीनता एक ज्योतिर्विज्ञानिक तथा भाषा शास्त्रीय अध्ययन (2002)

3 वेदों में ज्योतिर्विज्ञान भारतीय विज्ञान दर्शन तथा संस्कृति के इतिहास से सम्बन्धित एक परियोजना भारत शासन के अन्तर्गत।

4 परवर्ती महिलाओं, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषद तथा सूत्र ग्रन्थों में ज्योतिर्विज्ञान

5. पंच सिद्धान्तों का ज्योतिष

इसके अतिरिक्त आपके देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत साहित्य, संस्कृति, पुराइतिहास तथा ज्योतिष विषयों पर 200 से अधिक लेख प्रकाशित हुए हैं।

1. रामकथा की इतिहासिक परम्परा तथा काल निर्णय, 2. पुराणों एवं रामायण में उपलब्ध इक्ष्वाकु वंशावलियां एवं कालिदास की रघुवंशावली समीक्षात्मक अध्ययन, 3. जनजातीय जीवन एवं साहित्य में राम, 4. कालिदास से साक्षात्कार प्रणिपात एवं परिप्रश्न : डॉ. विद्यानिवास मिश्र के निबन्ध कालिदास से साक्षात्कार की समीक्षा

पुरस्कार एवं सम्मान

आपको साहित्य साधना के लिए अनेक सम्मान और पुरस्कार दिए गए :

1 कलकत्ता का हनुमान टेम्पल ट्रस्ट पुरस्कार - 1989 (उपन्यास 'अराज राज' पर)

2 उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान का प्रेमचन्द पुरस्कार - 1991 (उपन्यास 'अराज राज' पर)

3 साहित्य का श्रीमन्नारायण पुरस्कार - 2001

4. संस्कृत वांग्मय में निपुणता तथा साहित्य में पाण्डित्य के लिए महामहिम राष्ट्रपति का प्रमाण पत्र 2014

रामकथा परक उपन्यास

डॉ.गुप्त ने एक साहित्यकार की दृष्टि से रामकथा को पढ़ा और उसी रामकथा पर आधारित तीन उपन्यास - अराज, राज, सुराज राज और विराज राज की रचना की। इन तीनों उपन्यास में रामकथा के माध्यम से चिन्तन के तीन विभिन्न आयामों का प्रतिफलन है, जो रामकथा की वास्तविक कथा को ध्यान में रख विभिन्न धुरियों पर आधारित है। ये तीनों उपन्यास रामकथा के ऐसे पात्रों के चरित्र और रहस्यों को उद्घाटित करते है, जिनकी रामायण या रामचरित मानस में उपेक्षा की गई थी। दूसरी ओर भारतीय पारम्परिक शासन प्रणाली का

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वरूप प्रस्तुत करते हैं, जिसमें राष्ट्र की समृद्धि और उन्नति प्रभावित होती थी। वहीं रामकथा के समग्र दर्शन को भी पहुँचाना जिससे पाठक वर्ग अभी तक वंचित रहा। रामायण या रामचरित मानस की रामकथा का सम्बन्ध अध्यात्म और भक्ति से रहा है। डॉ.मोहन गुप्त के अनुसार रामायण अथवा रामचरित मानस में साहित्यकारों ने शत्रुघ्न की उपेक्षा की है। शत्रुघ्न पार्श्व नायक है।

विराज-राज रामकथा का एक अंश प्रस्तुत करता है, जो निषादराज गुह के राज्य और शासन से सम्बन्धित है। विराज-राज पाँच भागों में विभक्त है। जिसके प्रथम भाग में ऋषि वशिष्ठ के आश्रम का वर्णन है। जहां राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, गुह तथा और भी अन्य बालक ऋषि वशिष्ट के आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे।

दूसरा अध्याय - प्रतिमुख नाम से विराजराज का है जो गंगातट से प्रारम्भ होता है। निषादराज के बेटे गुह के विद्या अध्ययन कर लौटने के दृश्य को गुप्त जी ने साकार किया है। गुह पूरे श्रृंगवेरपुर का बेटा है।

तृतीय अध्याय गर्भ में अयोध्या नगरी का सुन्दर चित्रण किया गया है। राम-जानकी विवाह के साथ तीनों भाईयों के विवाह का वर्णन मनोयोग से किया है। अयोध्यावासियों के लिए विवाह महोत्सव बन जाता है।

चतुर्थ अध्याय विद्यारित में अजीत वर्मा और गुह के मध्य हुए युद्ध का वर्णन बहुत ही सटीक शब्दों में श्री गुप्तजी ने किया है।

उपन्यास का पाँचवा भाग निर्वहन है। इसमें निषाराज गुह के अपने राज्य के आसपास पनप रहे विद्रोहियों को खत्म कर वन जातियों - भील, किरात, कोल, ऋक्ष, वानर आदि को प्रश्रय देने का वर्णन है।

डॉ.मोहन गुप्त की राम कथा पर आधारित दूसरी कृति 'अराज राज' है। उन्होंने इसे नवीन कलेवर में प्रस्तुत किया है। उन्होंने इस उपन्यास में शत्रुघ्न को नायक माना है। 'अराज-राज' के एक प्रसंग में धर्म सभा में बटुकों की याचिका पर जब सब अपने निर्णय सुना रहे थे, तब शत्रुघ्न शान्त भाव से बैठकर सभी की बातों को बिना विचलित हुए सुन रहे थे। सभा किसी निर्णय पर नही पहुँच पा रही थी। विषय अत्यंत गंभीर था। कुछ भी परिणाम हो सकता था। अंत में स्वयं शत्रुघ्न ने बटुक पर निर्णय सुनाया। उन्होंने कहा कि राज्य की दूरगामी नीति के विषय के सम्बन्ध में तत्काल निर्णय नहीं लिया जा सकता। विशेषकर जब इस सभा में कुल पुरोहित वशिष्ठ तथा प्रधान अमात्य आर्य सुमंत नही हैं। शत्रुघ्न के इस निर्णय पर बटुक प्रसन्न हुए क्योंकि उन्होंने अपने विवेक से यह निर्णय लिया था।

डॉ.मोहन गुप्त का 'सुराज राज' भी रामकथा परक उपन्यास है। इस उपन्यास में कथा के माध्यम से शासन व्यवस्था के अनेक पहलुओं को उद्घाटित किया गया है।

निष्कर्ष

वस्तुतः रामकथा परक उपन्यासों की परम्परा में डॉ. मोहन गुप्त के तीनों उपन्यास विराज राज, अराज राज व सुराज राज सर्वथा भिन्न एवं नवीन आयामों को लिए हुए है। डॉ. गुप्त के ये तीनों उपन्यास रामकथा की समग्रता को प्रस्तुत करते हुए उन अनछुए आयामों को घटनाओं को, पात्रों को और उपक्रमों को प्रस्तुत करते हैं, जो सर्वथा भिन्न, अनछुए, नवीन व समकालीन हैं। संक्षेप में कहा जाए तो डॉ. गुप्त ने हिन्दी साहित्य में रामकथा की चली आ रही परम्परा से हटकर नए आयाम प्रदान किये। जिसमें नवीन

दृष्टि एवं अवधारणा के साथ रामकथा को प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 अराज राज, डॉ. मोहनगुप्त, 1998

2 विराज राज, डॉ. मोहनगुप्त 1995

3 सुराज राज, डॉ. मोहनगुप्त 2009

4 संस्कृति के राज पुरूष डॉ. मोहनगुप्त अभिनंदन ग्रंथ 2020